'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ११८ | वाराणसी, गुरुवार, १५ अक्टूबर, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

वारामुल्ला (जम्मू-कश्मीर) २४-७-'५९

समाज की शक्ति तभी प्रगट होगी, जब हम छोटी-छोटी बातों से ऊपर उठकर सोचेंगे !

अभी हम एक बहुत बड़ा पहाड़ लाँघकर आपके सूबे में आये हैं। जब हम पीरपंजाल के उस तरफ थे, तब बहुत बड़ा सैलाब आया। जिसकी वजह से हमें वहाँ रुकना पड़ा। ऐसा दीख रहा था कि शायद हम पहाड़ नहीं लाँघ सकेंगे। हमने सुना है कि मुहम्मद गज़नी कश्मीर पर हमला करने के लिए उसी रास्ते से आया और लोरेन में उसने शिकस्त खायी थी। वह पहाड़ नहीं लाँघ सका और न वहाँके लोगों को ही जीत सका। इसलिए उसे वहाँसे भागना पड़ा। जिस शख्स ने १५ दफा हिंदुस्तान पर हमला किया और बहुत-सी लड़ाइयाँ जीतीं, उसी-को पीरपंजाल के सामने और वहाँके बहादुर लोगों के सामने शिकस्त खानी पड़ी और वापस लौट जाना पड़ा।

मैं अल्लाह का बन्दा हूँ

हम जब वहाँ रुके तो हमने अल्लाह के सामने सत्याग्रह किया था। इस तरह अल्लाह के और उसके बन्दे के बीच सत्याग्रह चलता है। मैं अगर अल्लाह का बन्दा नहीं हूँ तो कुछ भी नहीं हूँ। हमने वहाँ कहा था कि अगर मैं पीरपंजाल नहीं लाँघ सका तो अल्लाह का इशारा समझकर वापस पंजाब लौट जाऊँगा, कश्मीर-वैली में नहीं जाऊँगा। अगर उसकी ख्वाहिश है कि हम कश्मीर जायँ तो हम पीर लाँघकर ही जायँगे। उसके बाद हमने देखा कि हम पीर पर चढ़े तो पहले दिन कुछ बारिश हुई और हमें यह देखने को मिला कि अल्लाह चाहे तो सब कुछ कर सकता है। हमें अल्लाह की कुदरत के बारे में कोई शक नहीं था, हम जानते ही थे कि वह चाहे जो कर सकता है। लेकिन हमने कहा था कि अल्लाह हमारी फजीहत करेगा तो वह हमारी नहीं, उसीकी फजीहत होगी। फिर हमने देखा कि दो दिन आसमान बिलकुल साफ रहा और हमारा सत्याग्रह कामयाब हुआ। अल्लाह की इजाजत से, उसीके हुक्म से, उसीकी रहम से हम यहाँ आ पहुँचे।

दिल खोलकर देनेवालों से माँग

अभी यहाँपर हमारे एक भाई ने हमारा इस्तकबाल (स्वागत) करते हुए एक बात कही कि यहाँ जमीन पर सीलिंग हुआ है, इसलिए दान में जो जमीन मिलती है, उसकी अपनी खुसूसियत है। दूसरे सूबों में जो जमीन मिलती है, उसकी बनिस्बत हम यहाँके दान को कुछ अहमियत दें। भाई ने यह माँग ठीक ही रखी है। हमने पहले ही कहा था कि जम्मू-कश्मीर में जो दान मिलता है, उसकी हम बहुत कद्र करते हैं। लेकिन अल्लाह की यह कुदरत है कि जो दिल खोलकर देते हैं, उनसे और भी माँगा जाता है। माँ बच्चों की खूब खिदमत करती है तो बच्चे माँ से और माँगने में कतरते नहीं, वे माँगते ही चले जाते हैं और माँ देती चली जाती है। मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि आप भी उसी तरह देते चले जायँ !

दान देने में आप यह चाह न रखें कि उसकी कोई कद्र करे। कुरान-शरीफ में कहा है कि वे लोग सच्चे इबादत करनेवाले होते हैं, जो अल्लाह के बन्दे होते हैं। वे देते चले जाते हैं। अल्लाह के चेहरे के दर्शन के लिए नहीं देते, लेकिन वे "वजूहल्लाह" के लिए देते हैं। अगर यह पूछा जाय कि अल्लाह का कोई चेहरा है तो कहा जायगा, नहीं। लेकिन कुरानशरीफ में दो लब्ज आते हैं 'वजूहल्लाह' और 'यदुल्लाह'। याने अल्लाह का चेहरा और अल्लाह का हाथ। वैसे अल्लाह को हाथ, पाँव, चेहरा नहीं है, फिर भी इन्सान के सामने बोलता है तो ऐसी जबान बोलता है, जो इन्सान समझ सकता है। नहीं तो अगर हम ऐसे अल्लाह की बात सामने रखेंगे, जिसका तसब्बर, (चित्र) ही नहीं कर सकते हैं, तो सारा कहना बेकार होगा। इसलिए वजुहल्लाह कहना पड़ता है। मैं आपसे कहना यह चाहता हूँ कि आप दान देने में यह चाह न रखें कि आपके दान की कोई कद्र करे। बल्कि वजु-हल्लाह की चाह रखें। फिर आपके ध्यान में आयेगा कि छिट-पुट दान से कुछ नहीं होगा।

कानून से काम नहीं होगा

सरकार ने बगैर मुआवजे की जमीन ले ली तो जमीनवाले भी बगैर अक्ल के नहीं थे। जब अल्लाह ने अक्ल खैरात की तो उस वक्त वे गैरहाजिर नहीं थे। इसलिए उन्होंने कानून बनने से पहले ही बहुत सारी जमीन अपने रिश्तेदारों में तकसीम कर ली। कानून से आपने जो करना चाहा, वह बहुत सारा बेकार

www.vinoba.in

गया। यह काम ऐसा है, जो कानून से किया ही नहीं जा सकता। तिसपर भी सरकार को कुछ जमीन मिली है, लेकिन उसमें बहुत सारी निकम्मी जमीन है। अच्छी जमीन लोगों ने पहले ही बाँट ली है। सरकार को जो जमीन मिली, वह भी मुजारों के हाथ में गयी, बेजमीनों को नहीं मिला। बेजमीन जैसे के तैसे ही रह गये। जो सबसे नीचे का तबका है, जो गिरे हुए हैं, जिन्हें मदद की जरूरत है, उन्हें कुछ भी मदद नहीं मिलती। खुशी की बात है कि सरकार ने अभी इज़हार किया है कि उनके पास जो जमीन पड़ी है काबिल काश्त, वह बेजमीनों के वास्ते खोली जायगी। मैं उम्मीद करता हूँ कि उस इज़हार के मुताबिक बेजमीनों में जमीन तकसीम हो जायगी।

मैं सैलाब लाया हूँ

मैं क्या चाहता हूँ, मेरा मुतालबा (माँग) क्या है? मैं आया हूँ तो कौन आया हूँ, यह समझना चाहिए। मैं सैलाब आया हूँ। मैंने अपने आगे सैलाब को भेज दिया था। सैलाब मसावात (समानता) करता है। तफरका (भेद) नहीं करता है। अल्लाह की कुदरत यही है। वह बारिश बरसाता है तो सब-पर बराबर बरसाता है। सूरज की धूप सबको मिलती है। हवा सबके लिए है। इसके मानी यह है कि अल्लाह की नियामतें सबको मिलें। इसलिए जमीन की मिल्कियत की बात करना याने अल्लाह के खिलाफ बग़ावत करना है। मैं कहना चाहता हूँ कि यह शिरकत है और कुफ्र है। वही एक मालिक हो सकता है। दूसरा कोई मालिक नहीं हो सकता। इसलिए जमीन की माल-कियत मिटानी होगी। यह काम प्यार से और अदमतशद्दुद (अहिंसा) से करना होगा। सैलाब ने हमें यही सिखाया है।

जरूरतमन्द कौन है?

पाँच साल पहले बिहार में मुझे यही तजुरबा हुआ। वहाँ-पर भी इसी तरह सैलाब आया था और मेरी यात्रा उन्हीं जिलों में थी, जैसे दरभंगा, मुजफ्फरपुर, सहरषा और पूर्णिया, जहाँ कमर तक पानी में से गुजरना पड़ता था। वहाँपर मैंने देखा कि सरकार की तरफ से मदद दी जाती थी, लेकिन मदद पहुँचाना मुश्किल होता था। कौन जरूरतमन्द है, यह पहचानना मुश्किल होता था। क्या रोनी सूरत लेकर आनेवाला जरूरतमन्द है? जो सच्चा जरूरतमन्द होता है, उसे तो जबान ही नहीं होती। वह दूर ढकेला जाता है। उसे ढूँढ़ना पड़ता है, जो सरकार के लिए नामुमकिन है। इसलिए जब सरकार की तरफ से मदद दी जाती है तो जिन्हें ज्यादा जरूरत है, उन्हें कम मिलती है या नहीं मिलती है और जिन्हें जरूरत नहीं है, उन्हें मिलती है। ऐसा यहीं-पर हो रहा है, ऐसी बात नहीं है और मैं ही यह कह रहा हूँ, ऐसा भी नहीं है। कम्युनिटी-प्रोजेक्ट के मन्त्री मिस्टर डे ने कहा है कि हम मदद देना चाहते हैं, लेकिन जिनको मदद मिलनी चाहिए, उन्हें नहीं मिलती है। आज तो मदद ऐसों को मिलती है, जो मदद खींच सकते हैं। इसके मानी यह है कि पैसे के पास पैसा चला जाता है।

भूदान ग्रामदान की पृष्ठभूमि

इस हालत में आप ग्रामदान करते हैं तो सबको ठीक से मदद दी जा सकती है। फिर गाँव की एक कमेटी बनेगी, जिसके जरिये आसानी से मदद पहुँचायी जायगी। जब मुझसे कहा गया कि दूसरे सूबे में मिलनेवाले दान से यहाँके दान की कद्र ज्यादा करो तो मैं कहना चाहता हूँ कि दूसरे सूबों में खाने के लिए पत्थर मिले और यहाँ ईंट मिले तो यह कहना ठीक है कि ईंट पत्थर से ज्यादा मुलायम होती है, लेकिन वह रोटी की जगह नहीं ले सकती है। वैसे ही जब तक जमीन की मिल्कियत कायम है, तब तक कुछ खास काम नहीं बनता है। फिर भी मैं छोटे-छोटे दान इसलिए लेता हूँ, क्योंकि मेरी तहरीक दिलों को जोड़ने की है। जब तक दिल मुलायम नहीं होते हैं, तब तक जुड़ नहीं सकते हैं। पहले दिलों को मुलायम बनाना पड़ता है, वसी (व्यापक) बनाना पड़ता है। छोटे दानों से दिलों को मुलायम बनाने में मदद होती है, इसलिए मैं पहले छोटे दान लेता हूँ, फिर आप ग्रामदान करके मिल्कियत मिटाने के लिए तैयार हो जायँगे। आप यह करेंगे तो आपके सियासी मसले भी हल हो जायँगे।

साइन्स और सियासत

आज कुछ भाई मेरे पास आये थे, जिन्होंने कुछ सियासी मसले मेरे सामने रखे। मैं कहना चाहता हूँ कि दुनिया में ऐसा एक भी देश नहीं है, जहाँपर सियासी मसले नहीं हैं। वैसे होना तो यह चाहिए कि अमेरिका में सियासी मसले न हों, क्योंकि दुनिया की आधी दौलत वहाँपर है, वहाँकी जमीन जरखेज है, सिर्फ ४०० साल से जोती हुई है। वहाँ साइन्स प्रगति कर चुका है। वहाँ किसी चीज की कमी नहीं है। तिसपर भी वहाँ-पर डर छाया हुआ है। फौज पर अरबों रुपयों का खरचा किया जा रहा है। नये-नये हथियार ईजाद हो रहे हैं। आज दुनिया में जिधर देखो, उधर डर छाया हुआ है। हर किसीकी छाती में धड़कन है। रूस अमेरिका से डरता है और अमेरिका रूस से डरता है। क्या रूस में शेर भेड़िया रहते हैं? दोनों देशों में हमारे जैसे ही दो हाथ, दो पैरवाले जानवर रहते हैं, जिनको दिल भी हासिल है। दोनों देशों के लोग अपने बाल-बच्चों में रहते हैं, उनपर प्यार करते हैं। इस तरह रूस के प्यार करने-वालों से अमेरिकावाले डरते हैं और अमेरिका के प्यार करने-वाले लोगों से रूसवाले डरते हैं। अब तो रूस के पास ऐसे हथियार हैं कि वे घर बैठे-बैठे कहीं भी फेंके जा सकते हैं। अमेरिका के नागरिक शिकायत करते हैं कि अमेरिका उस मामले में पिछड़ रहा है। अभी हमने पेपर में पढ़ा कि अमेरिका का आसमान में उड़नेवाला जहाज दूर तक नहीं गया तो अमेरिकावाले घबड़ा गये हैं। लेकिन वहाँका एक नामानिगार (संवाददाता) लिखता है कि घबड़ाने की जरूरत नहीं है। रूसवाले आइ. सी. बी. एम. से जो काम कर सकते हैं, वही काम अमेरिका दूसरे हथियारों से कर सकती है। कहा जाता है कि अमेरिका का एक अड्डा पेशावर में बन रहा है। यह समझ लीजिये कि पाकिस्तान अभी अमेरिका का बन्दा, चेला बन गया है। वह अमेरिका के कब्जे में है, इसमें किसीको शुबह नहीं होना चाहिए। जो कौम फौज की ताकत पर भरोसा रखेगी, उसे या तो रूस की या अमेरिका की कदमपोसी करनी पड़ेगी। वैसे अमेरिका जैसे मुल्क को डरने की जरूरत नहीं है, लेकिन वह भी डरता है। रूस और अमेरिका जैसे बड़े देश भी डरते हैं और हिन्दुस्तान, पाकिस्तान जैसे छोटे देश भी डरते हैं।

इस तरह सारी दुनिया में जो डर छाया हुआ है, वह तब तक नहीं मिटेगा, जब तक हमारे दिमाग सियासत में उलझे हुए रहेंगे। इसलिए सियासतदाँ से मैं कहना चाहता हूँ कि साइंस के जमाने में सियासत गयी बीती चीज हो गयी है। अब आपको ऐसी ताकत, प्यार की ताकत ढूँढ़नी होगी, जिससे दिल के साथ दिल

www.vinoba.in

जोड़ सकें । जिनके दिल जुड़े हुए हों, उनपर कोई हमला नहीं कर सकता है ।

साम्राज्यवादी तरीका

हम लोगों के पास रूस और अमेरिका के जैसे हथियार तो नहीं हैं, लेकिन हम कहते हैं कि हम एक छुरी रखेंगे । अब वह छुरी किस काम में आयेगी ? अपने ही भाई के पेट में भोंकने के काम में आयेगी । रूस और अमेरिका के खिलाफ तो आपकी कुछ नहीं चलेगी । यह मत समझिये कि इस जमाने में कोई मुल्क यहाँ आकर आप पर हुकूमत चलायेगा । दूसरे देशों में जाकर हुकूमत चलाने की बात अब नहीं चल सकती है । रोम की सल्तनत १२०० साल तक चली, लेकिन अंग्रेजों की सल्तनत यहाँ मुश्किल से डेढ़ सौ साल चली । एक देश का दूसरे देश पर कब्जा चले, यह बात साइन्स के खिलाफ है । क्योंकि उससे वर्ल्डवार का डर रहता है । इसलिए किसी देश का दूसरे देश पर हुकूमत चलाना, वहाँका कारोबार अपने हाथ में लेना, यह सब अब बनेगा भी नहीं और जरूरी भी नहीं है । लेकिन अब 'स्फेयर आफ इनफ्लुएन्स', वजन के मैदान की बात चलती है । रूस और अमेरिका ने अपने-अपने वजन के मैदान बना रखे हैं । चीन भी उसकी तैयारी कर रहा है और दूसरे देश भी चाहते हैं कि हमारा कहीं वजन हो ।

एकता ही ताकत है

ऐसी हालत में आप अपने छोटे दिमाग से सियासत चलाना चाहेंगे और इस छोटे से कश्मीर के ४ टुकड़े करेंगे तो आपकी ताकत नहीं बनेगी, बल्कि ताकत टूट जायगी । आज एक सियासी जमात के भाइयों ने हमसे पूछा कि फिर हमें क्या करना चाहिए ? मैंने कहा, सियासत को तोड़ने का काम करना चाहिए । गाँव-गाँव के लोग अपने गाँव का एक कुनबा बनायें । गाँव में स्वराज्य कायम करें । अपना मंसूबा गाँववाले खुद बनायें । देहात का मंसूबा देहली न बनाये, बल्कि देहात बनाये । देहली उसमें कुछ मदद दे । यह सब हमें करना होगा । गाँव में फूट डालने से ताकत नहीं बनेगी । लेकिन आप गाँव को एक बनाने का काम करेंगे तो कश्मीर की, हिन्दुस्तान की और दुनिया की भी ताकत बढ़ेगी । यह नहीं करेंगे तो चन्द लोगों के हाथ में ही दुनिया की हुकूमत रहेगी, जिनके हाथ में एटॉमिक वेपन्स होंगे । लेनिन ने कहा था कि हमने मासेस के इन्टरेस्ट में हथियार उठाये हैं । मालदार लोगों को, 'क्लास्टेड इन्टरेस्ट' को हम इन हथियारों से खत्म करेंगे और फिर उसके बाद यह हथियार अवाम के हाथ में आयेंगे । लेकिन हम देख रहे हैं कि आज रशिया में क्या चल रहा है ? वहाँपर हथियार आज भी चन्द लोगों के हाथ में ही हैं, अवाम के हाथ में नहीं हैं । अवाम उन हथियारों का इस्तेमाल ही नहीं कर सकती है । इसलिए अगर आज की हालत कायम रही तो जिनके हाथ में एटॉमिक वेपन्स हैं उन्हींकी हुकूमत चलेगी, फिर चाहे जम्हूरियत हो या सोशलिज्म हो या कम्युनिज्म हो । इसलिए छोटी सियासत के विचार छोड़ दीजिये ।

नागपुर प्रस्ताव

यहाँके तुलबाओं ने और उस्तादों ने मुझसे कुछ सवाल पूछे हैं, जिनमें एक सवाल यह है कि नागपुर कांग्रेस के कोऑपरेटिव फार्मिंग और सीलिंग के प्रस्ताव के बारे में आपकी क्या राय है ? मैं कहना चाहता हूँ कि नागपुर का जो प्रस्ताव है, वह प्रस्ताव है ही नहीं । प्रस्ताव की जो कीमत होती है, वह उसके पीछे नहीं है । उसमें एक चाह का इजहार है, विशफुल थिंकिंग है । उसमें कहा गया है मुश्तरका खेती हो । लेकिन हम कानून से वह चीज लादना नहीं चाहते हैं, बल्कि सबकी रजामन्दी से काम करना चाहते हैं ।

आज हिन्दुस्तान एक कुश्ती का अखाड़ा बना है, जिसमें बड़े-बड़े कसे हुए बुजुर्ग कुश्ती के लिए खड़े हैं । एक बाजू राजाजी हैं और दूसरी बाजू पंडित नेहरू हैं । लेकिन उस प्रस्ताव में कुछ चीज ही नहीं है कि जिसके खिलाफ किसी को जाना पड़े । उसमें जो मुश्तरका खेती की बात है उससे मिल्कियत तो कायम रहेगी और हरएक के पास जितनी जमीन है, वह उसीकी ही मानी जायगी और मिकदार के मुताबिक मुनाफा तकसीम होगा । इसमें बेजमीन ऐसे ही रह जायँगे । उनके पास कुछ भी नहीं रहेगा । नागपुर प्रस्ताव में तीन बातें हैं कि उसमें मिल्कियत कायम रहेगी, बेजमीनों को कुछ नहीं मिलेगा और वह चीज सबकी रजामन्दी से करनी पड़ेगी । याने ग्रामदान की दिशा में उसमें आधा कदम भी नहीं बढ़ाया गया है । अगर मेरी राय पूछो तो मैं कहूँगा कि उस प्रस्ताव की मंशा अच्छी है, लेकिन उससे कुछ ज्यादा होनेवाला नहीं है ।

कारखाने की मिल्कियत का सवाल

और एक सवाल पूछा गया है कि आप जमीन की मिल्कियत मिटाना चाहते हैं तो कारखानों की मिल्कियत मिटाने की बात क्यों नहीं करते हैं ? मैं कहना चाहता हूँ कि हम कारखानों की मिल्कियत भी जरूर मिटाना चाहते हैं । लेकिन हमें कदम-ब-कदम आगे बढ़ना है । जमीन की मिल्कियत मिट गयी तो मिल्कियत की बुनियाद भी उखड़ जायगी । फिर 'लैन्ड स्लाइड' हो जायगा । दूसरा विचार यह है कि जमीन की असली कीमत है और पैसे की कीमत खयाली है । मेरे पास १०,०००) रुपये हैं और मैं आपके पास दूध माँगने आया, लेकिन आपने कहा कि मैं दूध नहीं बेचूँगा, वह मेरे बच्चे के लिए है । फिर मेरे दस हजार रुपये बेकार हो जायँगे । दूध की असली कीमत है । पैसे की नकली कीमत है । पैसा तो छापेखाने में छपता है । ठप-ठप करके नोटें छापी जाती हैं । जितना चाहिए, उतना पैसा पैदा किया जा सकता है । 'एक ठप में एक रुपये का नोट तो दूसरे ठप में हजार रुपये का नोट । इसलिए पैसे को हम बेकार बना सकते हैं । मान लीजिये कि गाँव के लोगों ने जमीन की मिल्कियत मिटा दी । ग्राम-स्वराज्य कायम किया और एक होकर यह तय किया कि हम गाँव में दस्तकारियाँ खड़ी करेंगे, कपड़ा, तेल, गुड़ वगैरह चीजें गाँव में ही बनायेंगे तो फिर यह होगा कि गाँववालों को दूध, मक्खन जैसी चीजें बेचनी नहीं पड़ेंगी । आज उन्हें कपड़ा, तेल जैसी हर चीज खरीदनी पड़ती है । इसलिए उनके पास जो चीजें हैं, बेचनी पड़ती हैं । लेकिन गाँव में स्वराज्य कायम होने पर श्रीनगरवालेको मक्खन खरीदने के लिए गाँववालों के पास आना पड़ेगा । श्रीनगर में न मक्खन बनता है, न दूध, न फल, न तरकारी, न अनाज बनता है । वहाँ कुछ भी नहीं बनता । वहाँ सिर्फ पैसे का जाल है, गुरूर है । सफेद कागज पर काली स्याही से लिखा जाता है दस रुपया, सौ रुपया, हजार रुपया । ऐसे कागज उनके पास हैं और पीले पत्थर, लाल पत्थर, सफेद पत्थर हैं, जो सोना, मानक और हीरा कहे जाते हैं । जब गाँववाले मक्खन बेचने नहीं जायँगे तो श्रीनगरवाले उनसे पूछेंगे कि आप मक्खन क्यों नहीं बेचते हैं ? तो गाँववाले जवाब देंगे कि मक्खन हमारे बच्चों के पेट में जाता है । वही उसके लिए बेहतरीन जगह है । जब यह होगा तो श्रीनगरवालों के कागज और पत्थर बेकार बन जायँगे । आज तो यह होता है कि

www.vinoba.in

बच्चा मक्खन माँगता है तो उसे मक्खन नहीं, बल्कि तमाचा मिलता है। माँ कहती है कि मक्खन खाने की चीज नहीं है, बेचने की चीज है। लेकिन गाँववाले अपनी जरूरत की चीजें गाँव में ही बनायेंगे तो उन्हें ये सारी चीजें बेचनी नहीं पड़ेंगी। फिर श्रीनगरवाले उनसे पूछेंगे कि क्या आप हमारे दुश्मन बने हैं ? गाँववाले जवाब देंगे कि हम आपके दुश्मन नहीं बने हैं, लेकिन हमारे बच्चे मक्खन नहीं खायेंगे तो मजबूत नहीं बनेंगे और देश की पैदावार घटेगी। इसलिए आपके लिए ही यह जरूरी है कि हमारे बच्चे मक्खन खायें। फिर श्रीनगरवाले पूछेंगे कि क्या हमें कुछ भी नहीं मिलेगा ? फिर गाँववाले कहेंगे कि हम थोड़ा-सा दे सकते हैं, लेकिन दस रुपया सेर मिलेगा। इस तरह बाजार भाव गाँववालों के हाथ में आयेगा। आज तो बाजार-भाव शहरवालों के हाथ में है। गाँववालों को अपनी चीज सस्ती बेचनी पड़ती है और खरीदने के वक्त शहर की चीज महँगी खरीदनी पड़ती है। लेकिन बाजार-भाव उनके हाथ में आने के बाद फिर यह भी होगा कि गाँववाले शहरवालों से कहेंगे कि हम आपको थोड़ा भी मक्खन नहीं दे सकते। हमारे पास इतना वक्त नहीं है कि आपके लिए गाय रखें और उसकी खिदमत करें। इसलिए आपका लड़का अगर गाँव में आयेगा और गाय की खिदमत करने के लिए राजी होगा तो हम उसे वह काम सिखा देंगे, फिर आपको मक्खन मिल सकता है। फिर श्रीनगरवाला कहेगा कि हमारा लड़का तो कालेज में पढ़ता है, वह गाँव में कैसे आयेगा ? गाँववाले कहेंगे कि अगर वह कालेज में पढ़ता है तो उसे हरकी (शाब्दिक) मक्खन मिल सकता है। लेकिन अगर वह सच्चा मक्खन चाहता है तो आपको उसे गाँव में भेजना पड़ेगा। आपको अपने एक लड़के को गाँव में भेजना ही होगा। अगर उसे दूध दुहने का इल्म हासिल नहीं है तो हम उसे वह काम नहीं देंगे, गोबर उठाने का काम देंगे। जब ऐसा होगा तो आज जो शहर का असर देहात पर पड़ता है, उसके बदले देहात का असर शहर पर पड़ेगा। आपके शहरों के कारखाने चलानेवाले मजदूर तो देहात से ही जाते हैं। लेकिन जब देहातों की जिन्दगी, सुख, चैन की बनेगी तो मजदूर शहर में क्यों जायँगे ? फिर कारखानेवालों को मजदूरों की जरूरत पड़ेगी तो उन्हें गाँववालों की शर्तें मंजूर करनी पड़ेंगी। गाँववाले कहेंगे कि आप कारखाने की मिल्कियत मुश्तरका बनायेंगे, तभी मजदूर आपके पास आयेंगे। मैंने आपके सामने नाटक का एक अंक रखा। यह नाटक हमें करना है। कारखानों की मिल्कियत मिटाने का यही तरीका है।

'महत्तर' को समझें

आज यहाँके कुछ मेहतर हमसे मिले थे। मेहतर संस्कृत लब्ज 'महत्तर' से बना है। उसके मानी हैं कि जो महान् से महान् है, वह मेहतर है। मेहतर सबसे अहम खिदमत करते हैं। पाकिस्तानवालों ने सिंध से सभी हिन्दुओं को भगाया। आज वहाँ दवा के लिए भी हिन्दू या सिख नहीं मिलेगा। लेकिन उन्होंने वहाँ के मेहतरों को जाने नहीं दिया। यों कहकर कि वह एसेंशियल सर्विस, जरूरी खिदमत है। मेहतरों के लिए मेरे दिल में बहुत हमदर्दी है। इसकी वजह आपको मालूम नहीं है। मैंने वर्षों तक रोजाना एक घंटा मेहतर का काम किया है। उस काम के लिए सूरज की ही मिसाल दी जा सकती है। जैसे सूरज रोज उगता है, वैसे ही मैं रोज वह काम करता था। या दूसरी मिसाल मेरी अपनी ही है। जिस नियमितता से मैं अभी भूदान का काम करता हूँ, उसी नियमितता से मेहतर का काम करता था। एक दिन बहुत बारिश हुई तो नदी का पानी चढ़ने की वजह से मैं उस गाँव में नहीं जा सकता था, जहाँपर मैं मेहतर का काम करता था। लेकिन मैं अपने तयशुदा वक्त पर फावड़ा लेकर नदी के पास गया और उस किनारे जो लोग खड़े थे, उनसे मैंने कहा कि गाँव के मन्दिर में जो भगवान हैं, उनको इत्तला दे दो कि गाँव का मेहतर गाँव की खिदमत के लिए आया था लेकिन पानी की वजह से उसे वापस लौटना पड़ रहा है। फिर मैंने उन लोगों से पूछा कि आप क्या सुनायेंगे ? उन्होंने कहा कि बाबाजी आये थे और वापस गये। मैंने कहा कि यह मत सुनाओ। आपके लिए मैं बाबा हूँ, लेकिन इस गाँव का मैं मेहतर हूँ।

इस तरह मैंने बहुत प्यार से मेहतर का काम किया है। दुःख की बात है कि जो सबसे अहम काम है, उसे नीच माना गया है। जब इस तरह माना जाता है तो समाज हर्गिज तरक्की नहीं कर सकता। गिबन ने रोम की सल्तनत की गिरावट की वजह बताते हुए कहा है कि रोम के लोग मेहनत मशक्कत को नीच समझने लगे, इसलिए उनकी सल्तनत खत्म हुई। इसलिए यह बहुत जरूरी है कि हम मेहतरों के काम को नीच न मानें। उनकी सहूलियतों की तरफ ध्यान दें। आज उन्हें सिर्फ तीस रुपया वेतन मिलता है, जिनमें से तीन रुपया मकान के किराये के लिए लिया जाता है। इतने पैसे में उनका कैसे चलेगा ? उनका वेतन तो बढ़ाना ही चाहिए, लेकिन मेरी सिफारिश है कि एक पाँच सालाना योजना बनाओ और तय करो कि मेहतरों के लड़कों से मेहतरों का काम लेना हम हराम समझेंगे। इसलिए उन्हें तालीम देकर दूसरा काम देंगे। इस तरह मेहतरों की नजात (मुक्ति) का काम हमें उठाना होगा। देहली में श्री जगजीवनराम ने मेरी मौजूदगी में कहा था कि मैं किसी काम को नीचा या ऊँचा नहीं मानता हूँ, लेकिन मेहतर का काम इन्सान को हर्गिज नहीं करना चाहिए। वह इन्सानियत को गिरानेवाला काम है। मैं मानता हूँ कि उन्होंने लाजवाब दलील पेश की। इन दिनों हर धन्धे में स्पर्धा चलती है। ब्राह्मणों ने चमड़े का काम भी लिया है। लेकिन मेहतर का काम करने के लिए दूसरा कोई नहीं जाता। उसके मानी यह है कि वह काम इन्सान के लायक नहीं है। हमारे देश में हम सचमुच में आजादी चाहते हैं तो उन लोगों को हमें आजाद बनाना होगा। मेरे दिल में इस काम के लिए तड़पन है। १५ अगस्त १९४७ के दिन मैंने एक घर में पिंजड़े में तोता देखा तो कहा कि आजाद देश के बाशिन्दों के घरों में पिंजड़े में तोते नहीं रह सकते। यों कहकर मैंने तोते को रिहा कर दिया। हम आजाद हैं तो दूसरे को गुलाम नहीं रख सकते। आजादी की दो अलामतें हैं। एक—हम किसीसे दबेंगे नहीं, डरेंगे नहीं और दो—हम किसीको दबायेंगे नहीं, डरायेंगे नहीं। इन दो सिफतों से इन्सान का दिल आजाद बनता है। जहाँ कोई जालिम है और कोई मजलूम, वह देश आजाद नहीं है। जालिम भी आजाद नहीं है और मजलूम भी आजाद नहीं है। मैं चाहता हूँ कि बारामुल्ला अच्छा गाँव बने। उसके लिए मेहतरों को आजाद करना होगा। ◆◆◆

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी

www.vinoba.in